CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 18th July 2020, Revised on 29th July 2020, Accepted 7th August 2020

आलेख

# भारतीय राजनीतिक संस्कृति का समसामयिक स्वरूप

* चन्द्र प्रकाश माली, शोधार्थी
डॉ.विष्णु कुमार, शोध निर्देशक
Email-maliprakashchander@gmail.com, vishnukr.12@gmail.com
भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)

*मुख्य शब्द* – अभिवृत्तियॉ, प्रतिक्रिया, राजनीतिक व्यवहार, संस्कृति आदि।

**सार संक्षेप**

व्यक्ति का आदर्श राजनीतिक व्यवहार तथा राजनीतिक व्यवस्था में अति सक्रिय भागीदारी राजनीतिक संस्कृति कहलाती है। भारतीय राजनीतिक संस्कृति की जड़े सार्वजनिक घटनाओं और व्यक्तिगत अनुभवों दोनों में समान रूप से निहित है। राजनीतिक संस्कृति का सिद्धान्त मनोविज्ञान और समाजशास्त्र को एकीकृत करने का प्रयास करता है, राजनीतिक विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय राजनीतिक संस्कृति का समसामयिक स्वरूप इस बात का गम्भीर प्रयास है कि भारत का प्रत्येक नागरिक समर्पित भाव से भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में भागीदारी निभाये, जिस प्रकार हम प्राचीन स्वस्थ्य परम्परा को सच्चे हृदय से अपनाते है, जिसका पालन न करने पर हमें समाज की बदनामी का भय रहता है, उसी प्रकार सक्रिय राजनीतिक सहभागिता ही राजनीतिक संस्कृति है। राजनीतिक संस्कृति राजनीतिक विचारधारा के औचित्य, कानून, सम्प्रभुता, न्याय राष्ट्रत्व, विधि शासन जैसी अवधारणाओं के अध्ययन के लिए विशेषकर व्यवहार परक विश्लेषण का प्रयोग है। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के सदस्यों की उस राजनीतिक व्यवस्था के प्रति अभिवृत्तियों , आदर्शो, मूल्यों, विश्वासों, भावनाओं, प्रतिक्रियाओं और राजनीतिक व्यवहार से ही इस व्यवस्था की राजनीतिक संस्कृति का निर्माण होता है। राजनीतिक व्यवस्था मनुष्य के राजनीतिक व्यवहार का परिणाम है, राजनीतिक व्यवहार गतिशील होता है अतः भारतीय राजनीतिक संस्कृति भी स्थिर न होकर गतिशील है। भारतीय सभ्यता के प्रारम्भ से ही भारत में शक, यूनानी,यवन,कुषाण, तुर्क, मुगल, अंग्रेज आये तथा यहां की समन्वित सभ्यता और संस्कृति में समा गये यही भारतीय राजनीतिक संस्कृति का निरन्तर गतिशील और विकसित समसामयिक रूप है।

**प्रस्तावना**

राजनीतिक संस्कृति में किसी देश की राजनीतिक व्यवस्था के प्रति वहां के लोगों के दृष्टिकोण, विश्वास, लगन तथा मूल्य समाहित होते है। दूसरे शब्दों में राजनीतिक व्यवस्था के संदर्भ में लोगों के राजनीतिक विश्वास, भावनाएं और दृष्टिकोण होते है, उन्हें सामूहिक रूप में राजनीतिक संस्कृति कहा जाता है। राजनीतिक संस्कृति आधुनिक राजनीति का एक महत्वपूर्ण तथा नवीन दृष्टिकोण है। यह मनोविज्ञान और समाज शास्त्र को एकीकृत करने का प्रयास है ताकि राजनीतिक विश्लेषण सही प्रयुक्त हो सके। राजनीति विज्ञान के इतिहास में राजनीतिक सस्कृति का आगमन 1956 से स्वीकार किया जाता है, आमंड एंव पावेल के

विचारानुसार, ''राजनीतिक संस्कृति में ऐसे दृष्टिकोण , विश्वास, मूल्य और कला मिलती है जो संपूर्ण जनसंख्या में प्रचलित है। इसमे वे प्रवृतियॉ और नमूने भी सम्मिलित है जो इस जनसंख्या के विभिन्न भागों में मिलते है।''

ल्यूसियन पाई के अनुसार, ''राजनीतिक संस्कृति ऐसे दृष्टिकोणों, विश्वासों और भावनाओं का समूह है जो राजनीतिक विधि को व्यवस्था एंव अर्थ प्रदान करता है और जो उन निहित धारणाओं और नियमों की व्यवस्था करते हैं जिनके आधार पर राजनीतिक प्रणाली के व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है। राजनीतिक आदर्श और राजनीतिक प्रणाली के प्रचलित लक्षण भी इसके वृत में आते है । इस प्रकार राजनीतिक संस्कृति के मनौवैज्ञानिक और व्यक्तिनिष्ठ पलों की सामूहिक रूप में अभिव्यक्ति है।''

फाईनर के अनुसार ''राष्ट्र की राजनीतिक संस्कृति मुख्य रूप से शासकों राजनीतिक संस्थाओं तथा राजनीतिक प्रक्रियाओं की औचित्यपूर्णता को प्रकट करती है।''

**2. भारत की समसामयिक राजनीतिक संस्कृति के आधार**

भारतीय राजनीतिक संस्कृति के आधारभूत तत्व निम्नलिखित है –

1. **सामाजिक सरंचना का आधार –** ऐतिहासिक और भौगोलिक कारणों से जो एक विशेष प्रकार की संस्कृति बन जाती है उसमें परिवर्तन लाने हेतु किसी समाज की सामाजिक एंव आर्थिक संरचना भी उत्तरदायी होती है। यदि किसी देश के सामाजिक जीवन में जाति, धर्म, लिंग, वंश और वर्ग के आधार पर बहुत अधिक विभिन्नता हो तो लोकतांत्रिक राजनीतिक संस्कृति स्थापित होना बहुत मुश्किल हो जाता हैं भारत का समाज जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्रवाद आदि तत्वों से प्रभावित हो रहा है जिसके कारण भारतीय राजनीतिक संस्कृति पर इनका अत्याधिक प्रभाव पडा हुआ है। जाति ने भारत की राजनीति को बहुत अधिक प्रभावित किया है। जाति के आधार पर उम्मीदवारों का चयन होता है, भारत की सम्पूण चुनावी राजनीति जाति के इर्द–गिर्द ही घूमती है। भारत की राजनीतिक संस्कृति में जाति, धर्म, क्षेत्रवाद और भाषा आदि तनाव और संकट पैदा करने में उत्तरदायी बने हुये है।
2. **ऐतिहासिक आधार –** किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के लिए इतिहास से सबंध विच्छेद करना सम्भव नहीं है इतिहास किसी भी राजनीतिक संस्कृति को विशेष आकार प्रदान करने वाला प्रमुख आधार है राजनीतिक संस्कृति को समझने के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना अनिवार्य है। उदाहरण स्वरूप इंग्लैण्ड का इतिहास वहां के लोगों की शांतिपूर्ण परिवर्तन की इच्छाशक्ति को उजागर करता है, वही फ्रांस का इतिहास हिसंक आंदोलनों का गवाह है। भारत ब्रिटेन का उपनिवेश रहा, इसलिए भारत की राजनीतिक संस्कृति पर ब्रिटेन का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। भारत में कूनन का शासन और संसदीय शासन प्रणाली से संबंधित धारणा ब्रिटिश शासन व्यवस्था की देन है। इसलिए इतिहास राजनीतिक संस्कृति का अवश्य ही एक आधार है।
3. **भागौलिक आधार –** भूगोल राजनीतिक संस्कृति का मुख्य आधार है किसी देश की राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में उस देश की भौगोलिक स्थिति के कारण स्विटरलैंड ने तटस्थता की नीति को अपनाया है। जिसके कारण वह विश्व राजनीति में सक्रिय भाग नहीं ले पाता है। नेपाल की सीमा समुद्र से नहीं लगती है इसलिए वह अपने विदेशी व्यापार के लिए भारत पर निर्भर है। भारत ने भौगोलिक स्थिति व विश्व परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण किया।
4. **विचारधारा का आधार –** विचारधारा भी राजनीतिक संस्कृति का एक मुख्य आयाम है। जर्मनी और इटली की राजनीतिक संस्कृति को नाजीवाद तथा फासीवाद ने प्रभावित किया। उदारवादी विचारों से इंग्लैण्ड व अमेरिका जैसे देश प्रभावित हुए। मार्क्सवादी विचारधारा ने भूतपूर्व सोवियत संघ, चीन तथा पूर्वी यूरोपीयन देशों में एक विशेष राजनीतिक संस्कृति की पहचान दी। भारतीय राजनीतिक संस्कृति पर भी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। भारत ने गांधीवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद,गुटनिरपेक्षता आदि विचारधाराओं को अपनी राजनीतिक संस्कृति का आधार बनाया है संविधान निर्माताओं ने गांधीवादी विचारों से प्रभावित होकर भारतीय संविधान में अनुच्छेद 36 से 51 में नीति निर्देशक सिद्धांतों को शामिल किया है।

5. **अहिंसा** – अहिंसा भारतीय राजनीतिक संस्कृति का एक प्रमुख आधार है। भारतीय राजनीति में अहिंसा का अनुसरण प्राचीनकाल से होता रहा है। भारत को अहिंसा परमो धर्म की संस्कृति विरासत में मिली है अहिंसा का संदेश भारत में जैन धर्म एंव बौद्ध धर्म द्वारा प्राप्त हुआ है अहिंसा सिद्धात से प्रेरित होकर सम्राट अशोक ने युद्ध का परित्याग कर दिया था । भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी ने अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोडो आन्दोलन चलाया। आजादी के बाद अलगावाद की भावना ,क्षेत्रवाद , पृथक राज्य की मांग,भाषाई मतभेद, सम्प्रदायवाद, हडताल , बंद , अनशन आदि का प्रयोग हुआ, फिर भी इनका स्वरूप हिंसक होने के कारण ये जनसमर्थन प्राप्त नहीं कर सके। वर्तमान समय में कर्मचारी यूनियनों द्वारा बंद, अनशन तथा काम छोडों की प्रक्रिया, आरक्षण की मांगों को लेकर हिसंक आंदोलन को चलाया जाता है जिसे जनता द्वारा घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। भारत में सत्ताधारी राजनीतिक दल सभी समस्याओं का समाधान अहिंसा का प्रयोग करके हल करने की बात करते है।
6. **धार्मिक विश्वास** – भारतीय जनता की धर्म में गहरी निष्ठा है। जनता आत्मा–परमात्मा, लोक–परलोक, ईश्वर, मोक्ष, पुर्नजन्म आदि में आस्था रखती है। भारतीय जनता यह विश्वास करती है कि आज जो उनकी स्थिति है वह पिछले जन्म के कर्म का फल है। भारतीय नेताओं के गलत आचरण पर उन्हें ईश्वर द्वारा दंडित होने पर विश्वास करते है। जनता की धर्म के प्रति प्रगाढ आस्था ने उन्हें भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति भाग्यवादी बना दिया है देश की राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक दशा की खराब स्थिति को भाग्य का लिखा मानते है न कि उनके हालात के कारणों को जानने की कोशिश करते है। जबकि परिवर्तन जनता के आंदोलन तथा क्रांति द्वारा ही संभव है।
7. **भारतीयों की राजनीतिक उदासीनता** – प्राचीन काल में भारत में वर्ण व्यवस्था स्थापित थी। समाज में चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र थे। ब्राह्मण का कार्य शिक्षा व धर्म का प्रचार,, क्षत्रिय का कार्य राजनीति में भाग लेना तथा देश की रक्षा करना, वैश्य का व्यापार तथा शुद्र का कार्य तीनों वर्णो की सेवा करना था। राजनीतिक कार्यो का निर्वहन क्षत्रियों द्वारा किया जाता था बाकि जनता राजनीति के प्रति उदासीनता रहती थी मध्यकाल में भी यही स्थिति थी। ब्रिटिशकाल में राजनीतिक कार्यो में जनता की भागीदारी सीमित थी। आजादी के बाद भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित हुई । अब तक भारत में 17 आम चुनाव सम्पन्न हुए है जिन्होंने यह साबित कर दिया है कि भारतीय जनता राजनीति में प्रगाढ निष्ठा नहीं रखती है भारत में मतदान का प्रतिशत सामान्यत 75 से 80 प्रतिशत तक ही रहता है। शेष नागरिक मतदान करने ही नहीं जाते है जिसके कारण भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में कई दोष पैदा हो गए है।

**3. भारतीय समसामयिक राजनीतिक सस्कृति की विशेषताएं –**

राजनीतिक संस्कृति सामान्य संस्कृति का एक भाग है जिसमें समाज की विरासते होती है। राजनीतिक संस्कृति का अध्ययन एक नवीन धारणा है जिसके माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था तथा व्यवाहारिक राजनीति को समझना आसान है हर एक देश की राजनीतिक संस्कृति दूसरे देश से अलग होती है। भारतीय राजनीतिक संस्कृति अन्य देशों ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, चीन तथा जापान की राजनीतिक संस्कृतियों से भिन्न है। भारतीय समसामयिक राजनीतिक संस्कृति की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित है–

**1. भारतीय राजनीतिक में सामन्तवादी व्यवस्था के तत्व**

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के अन्तर्गत लोकतंत्र , गणतंत्र, व्यस्क मताधिकार, स्वतंत्र एंव निष्पक्ष न्यायपालिका प्रेस की स्वतंत्रता तथा स्वतंत्र चुनाव आयोग की स्थापना की गई। भारत में आजादी के 70 वर्षो बाद लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना के बावजूद भारतीय राजनीति पर सामंतवादी राजनीतिक सस्कृति की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। भारतीय राजनीति में आज भी महाराजा–महारानी, ठाकुर साहब, ठकुरानी जी तथा शाही खानदानों का वर्चस्व विद्यमान है इन व्यक्तियों का क्षेत्र की जनता अत्याधिक सम्मान करती है। इसलिए इनका अपने क्षेत्र की जनता पर बहुत अधिक प्रभाव है। दूसरी तरफ जनता अपने क्षेत्र से निर्वाचित विधायकों एंव सासंदों को श्रेष्ठ समझती है और वे निर्वाचित प्रतिनिध प्राचीन सामंतो की तरह जीवन यापन करते है।

**2. भारतीय राजनीति का व्यवसायीकरण** – भारतीय राजनीतिक संस्कृति की एक विशेषता यह है कि भारतीय राजनीतिक का व्यवसायीकरण हो गया है। भारतीय नेताओं ने राजनीति को व्यवसाय के रूप में अपना लिया है भारतीय नेताओं की संताने राजनीति में प्रवेश कर गई है, नेहरू, इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, राहुल गांधी, राजेश पायलट, सचिन पायलट, ये सभी राजनीति में वंशवाद के प्रतीक है, जिनके कारण भारतीय राजनीति इनकी जागीर बन गई है। इनके द्वारा भारत के बुद्धिजीवी, ईमानदार एंव कर्तव्यनिष्ट व्यक्तियों को राजनीति में सफल नहीं होने दिया जाता। भारत की अपेक्षा विकसित देशों अमेरिका, इंग्लैड, फ्रांस, जापान आदि देशों में राजनीति का इतना व्यवसायिकरण नहीं है।

**3. राजनीति में भ्रष्टाचार** – भ्रष्टचार एक अभिशाप है और राजनीतिक भ्रष्टाचार सब भ्रष्टचारों से बुरा है। भारत में शासन का मुश्किल से ही कोई ऐसा हिस्सा होगा जहां भ्रष्टाचार न हो। देश में सभी दलों के नेता भ्रष्टचार की निंदा करते है और चुनाव के समय सभी दल भ्रष्टचार को समाप्त करने का वायदा करते है आम चुनाव के समय यह सुनने को मिलता है कि भ्रष्टचार ने लोकतंत्र को कमजोर बना दिया है भारत में जो भी राजनीतिक दल सत्ता में आया है। उसने भ्रष्टचार पर अंकुश नहीं लगाया। राजनीतिक भ्रष्ट सांधनों का प्रयोग करके राजनीति में भ्रष्टाचार बढाते है। भारतीय राजनीति में फैलता भ्रष्टचार भारत जैसे विश्व के सबसे बडे लोकतंत्र के लिए घातक है।

**4. करिश्माई नेतृत्व** – भारतीय संविधान द्वारा समस्त शक्तियों का स्त्रोत भारतीय जनता को माना गया है, परन्तु व्यवहार में किसी न किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की प्रधानता रही है। भारतीय राजनीति करिशमाई नेतृत्व के ईर्द–गिर्द घूमती रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कांग्रेस ने नेहरू, इंदिरा, राजीव गांधी के नेतृत्व में सत्ता प्राप्ति की । भारतीय जनता पार्टी ने 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सफलता प्राप्त की। 16वे एंव 17वे लोकसभा के चुनाव मे भारतीय जनता पार्टी ने नरेन्द्र मोदी के चमत्कारिक नेतृत्व की बदौलत सफलता हासिल की। लोकतंत्र की सफलता के लिए यह अनिवार्य है कि लोक कल्याणकारी योजनाओं पर जोर दिया जाए न कि करिश्माई नेतृत्व पर।

**5. वोट की राजनीति** – भारतीय राजनीतिक संस्कृति की एक विशेषता वोट की राजनीति का उदय होना है किसी एक समुदाय या वर्ग को कानून द्वारा कुछ विशेष सुविधाएं उपलब्ध करवाकर उस समुदाय या वर्ग के वोटों को अपने पक्ष मे करना ही वोट की राजनीति है। भारतीय संविधान द्वारा अनुसूचित जातियों, जनजातियों तथा अल्पसंख्यक को कुछ विशेषाधिकार प्रदान किए गए है। इन वर्गो के मतों पर कांग्रेस पार्टी का अधिकार समझा जाता था । परन्तु धीरे–धीरे अन्य दलों ने भी अपने घोषणा पत्र में इन वर्गो को महत्व देना शुरू कर दिया ताकि इन वर्गो के मतों पर अधिपत्य स्थापित किया जा सके। भारतीय जनता पार्टी आरक्षण को समाप्त करके एक समानता व एकरूपता स्थापित करने के पक्ष में रहती थी, लेकिन अभी वर्तमान समय में संवर्ण वर्ग में आर्थिक दृष्टि से पिछडे वर्ग को आरक्षण दिया गया ताकि संवर्ण वर्ग के वोटो का लाभ प्राप्त किया जा सके। राजनीतिक दलों के इस प्रकार के कार्य वोट की राजनीति से प्रेरित होते है। आम चुनावों के अवसर पर लगभग सभी राजनीतिक दलों ने क्षेत्रीय दलों के साथ अवसरवादी सिद्धान्तहीन समझौते किए।

**6. लोकवादी नारें** – भारतीय राजनीति में लोकवादी नारों का बहुत अधिक महत्व है। इस प्रकार के नारे मतदाताओं को प्रभावित करते है। सन् 1971 में कांग्रेस पार्टी ने गरीबी हटाओं का नारा लगाकर सफलता प्राप्त की। जनता पार्टी ने 1977 में लोकतंत्र बनाम तानाशाही का नारा देकर जनसमर्थन प्राप्त किया। सन् 1980 में कांग्रेस ने ''सरकार वह अच्छी जो काम करें'' का नारा दिया व सत्ता प्राप्त की। सन् 1991 में भारतीय जनता पार्टी ने 'राम , रोटी और इंसाफ' का नारा दिया। सन् 2004 के आम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने इंडिया शाइनिंग' का नारा दिया। 16वी लोकसभा के आम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 'काला धन वापिस' तथा 'भ्रष्टचार मुक्त शासन' 'सुशासन' 'अच्छे दिन' के नारे देकर जनसमर्थन प्राप्त किया।

**7. राजनीतिक दलों के भीतर लोकतंत्र का अभाव** – लोकतंत्र में राजनीतिक दल अनिवार्य रूप से विद्यमान होते है। भारत में भी सभी राजनीतिक दल लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित है। परन्तु व्यवहार में उनके भीतर लोकतंत्र का अभाव पाया जाता है। राजनीतिक दल अपने संगठन के चुनाव समय पर नहीं करवाते है, दलों का कार्य दलों के केन्द्रीय नेतृत्व द्वारा चलाया जाता है। लेकिन जब राजनीतिक दलों के संगठनात्मक चुनाव होते है तो एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों की तानाशाही रहती

है। विश्व के सबसे बडे लोकतांत्रिक देश में राजनीतिक दलों के संगठनात्मक चुनाव निष्पक्ष व पारदर्शी आधार पर नहीं होते है।

**8. राष्ट्रीय समस्याओ की अपेक्षा क्षेत्रीय समस्याओ पर बल –** भारतीय राजनीतिक संस्कृति की एक विशेषता यह है कि पिछले कुछ अर्से से राष्ट्रीय समस्याओं की अपेक्षा क्षेत्रीय समस्याओ पर अधिक बल दिया जाने लगा है। राष्ट्रीय राजनीतिक दलों ने भी क्षेत्रीय मुददों व क्षेत्रीय समस्याओं को अपने घोषणा पत्र में रखना शुरू कर दिया है। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का निर्माण तो क्षेत्रीय समस्याओं के कारण होता है। क्षेत्रीय मुददों में क्षेत्रीय विकास की समस्या, नदी जल विवाद, सीमा विवाद, भाषायी अल्पसंख्यकों की समस्याएं आदि मुख्य है। क्षेत्रीय राजनीतिक दल राष्ट्रीय हित की अपेक्षा क्षेत्रीय हित को तरजीह देते है।

**9. निम्न जातियों का राजनीति में बढता महत्व –** आजादी के बाद भारतीय राजनीति में निम्न जातियों का महत्व बढ गया है। भारतीय संविधान द्वारा निम्न जातियों के लिए राज्य विधानमंण्डलों , लोकसभा तथा सरकारी नौकरीयों में स्थान आरक्षित रखे हुए है। वर्तमान समय में प्रत्येक राजनीतिक दल निम्न जातियों का समर्थन प्राप्त करने का हर संभव प्रयास कर रहा है। निम्न जातियों को एकजुट करने व एकता के सूत्र में बाधंने का कार्य बहुजन समाज पार्टी ने किया है ओर एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल का रूप धारण कर लिया है। दिल्ली में अरविन्द केजरीवाल सरकार ने भी आम आदमी पार्टी के माध्यम से यहीं किया है।

**10. हिंसा का प्रयोग –** अहिंसा का पालन भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से किया जाता रहा हैं। भारतीय संस्कृति का आधार अहिंसा है। परन्तु स्वतंत्रता के पश्चात हिंसा ने भारतीय राजनीतिक संस्कृति में विशिष्ट स्थान बना लिया है। चुनावों के दौरान कुछ राजनीतिक दल अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हिसंक सांधनों का प्रयोग करते है। भारत में चुनावों के दौरान राजनीतिक हत्याएं भी होती रहती है। कई राजनीतिक दलों ने अपनी निजी सेनाओं का गठन कर रखा हे जो चुनाव आयोग के लिए निष्पक्ष चुनाव सम्पन्न करवाने में समस्या पैदा कर देते है। वर्तमान समय में कई दलों द्वारा मतदाताओं का घर से बूथ तक ले जाने के लिए बूथ संगठन का निर्माण किया गया है ये बूथ संगठनकर्ता मतदाताओं को निष्पक्ष मतदान करने में रूकावट पैदा करते है। मतदाताओं पर दबाव बनाना व स्वतंत्र रूप से मतदान न करने देना भी हिसा का ही रूप है। भारतीय राजनीतिक में हिंसा का प्रयोग लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए बहुत बडा खतरा है।

## 4. उपसंहार

भारत की राजनीतिक संस्कृति का संरचात्मक पक्ष विकसित राजनीतिक व्यवस्था के समान है लेकिन व्यवहारिक रूप में परंपरागत तत्व विद्यमान है। भारतीय संसदीय प्रणाली का हम उदाहरण लेते है जो सरंचनात्मक रूप से ब्रिटेन की संसदीय व्यवस्था से मिलती है, परन्तु व्यवहार में भारतीय सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मूल्यों से प्रभावित होती है। भारतीय राजनीतिक संस्कृति के परंपरागत तत्वों में संप्रदायवाद , क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद, अलगाववाद आदि सम्मिलित है, दूसरी तरफ आधुनिक तत्वों में धर्मनिपेक्षता, समाजवाद, असलंग्नता, नागरिक स्वतंत्रताएं, समन्वयकारी दृष्टिकोण इत्यादि तत्व सम्मिलित है। व्यक्ति का राजनीतिक समाजीकरण भी होना आवश्यक है क्योंकि राजनीतिक समाजीकरण के माध्यम से ही व्यक्ति राजनीतिक संस्कृति में प्रवेश करता है। व्यक्ति का राष्ट्र, संविधान, राजनीतिक और संवैधानिक संस्थाओं में अटूट विश्वास तथा समर्पण की भावना, राजनीतिक व्यवस्था तथा देश में स्थानीय , राज्य तथा केन्द्र के आम चुनावों में सक्रिय भाग लेना यही भारतीय राजनीतिक संस्कृति का समसामयिक रूप है। भारत जैसे देश के संन्दर्भ में राजनीतिक संस्कृति की अवधारणाा का विशेष महत्व है । हमने भारत में एक धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्रीय व्यवस्था को अपना लिया है, अतः हमें समाजीकरण के माध्यम से एक धर्मनिरपेक्ष और लोकतन्त्रीय राजनीतिक संस्कृति का जो समसामयिक स्वरूप है उसे ह्रदय से अपनाना और विकसित करना होगा। आम जनता द्वारा आज भारत में स्थानीय स्वशासन, पंचायती राज, विधानसभा तथा लोकसभा चुनाव में प्रचार –प्रसार चुनाव रैलीयों में भाग लेने तथा मतदान आदि करना। अपने अधिकार और कर्तव्यों के प्रति जागरूक होना। समाज में अपनी रचनात्मक भूमिका निभाना यही भारत की समसामयिक राजनीतिक संस्कृति है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. पुखराज जैन, राजनीतिक सिद्धान्त, (साहित्य भवन पब्लिकेशन्स : आगरा 2018)
2. राजनीति विज्ञान, कक्षा 12, (राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर 2017)

3. आर.सी अग्रवाल, राजनीतिक सिद्धान्त(नई दिल्ली, एस चंद एंड कम्पनी 2008)
4. विकिपीडिया
5. समीरदास गुप्ता, राजनीतिक समाजशास्त्र(नई दिल्लीः पीयर्सन एजूकेशन इंडिया 2011)
6. जी.ए आमण्ड व जी.बी.पावेल कम्पेरटिव पोलिटिक्स,डेवलैपमेन्ट अपरोच(नई दिल्ली : एमेरेंड पब्लिकेसिंग को. 1972)
7. जे.सी.जौहरी, राजनीतिक समाजशास्त्र (आगरा : साहित्यय भवन पब्लिकेशन्स 2008)
8. प्रतियागिता दर्पण, इण्डिया टुडे। अंक जुलाई 2018
9. डॉ. ओ.पी गाबा, राजनीतिक सिद्धान्त, मयूर पेपरबैक्स, नई दिल्ली
10. भारत में जातिवाद : रजनी कोठारी

*** Corresponding Author**
**चन्द्र प्रकाश माली, शोधार्थी**
**डॉ.विष्णु कुमार, शोध निर्देशक**
*Email-maliprakashchander@gmail.com, vishnukr.12@gmail.com*
*भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)*